इकाई - 2

भूगोल में आधुनिक अवधारणा : मानववादी भूगोल तथा नारीवादी भूगोल (Modern concept in Geography : Humanistic Geography and Gender Geography)

पाठ - 5

पाठ-संरचना (Lesson Structure)

5.0 उद्देश्य (Objective)
5.1 परिचय (Introduction)
5.2 भूगोल में आधुनिक अवधारणा (Modern Concept in Geography)
5.3 मानववादी भूगोल (Humanistic Geography)
5.4 मानववादी विचारधारा का विकास (Development of Humanistic Concept)
5.5 मानववादी भूगोल के सार (Basic of Humanistic Geography)
5.6 मानववादी भूगोल के विधितंत्र (Methodology of Humanistic Geography)
5.7 आलोचना (Criticism)
5.8 नारीवादी/महिलावादी भूगोल (Gender/Feministic Geography)
5.9 नारीवादी भूगोल का विकास (Development of Gender Geography)
5.10 नारीवादी चिंतन के भेद (Classification of Feministic)
5.11 मानववादी भूगोल एवं नारीवादी भूगोल में संबंध (Relationship between Humanistic & Gender Geography)
5.12 सारांश (Summing up)
5.13 मॉडल प्रश्न (Model Questions)
5.14 संदर्भ पुस्तकें (Reference Books)

5.0 उद्देश्य (Objective)

इस अध्याय का उद्देश्य भूगोल में नूतन अवधारणा-मानवतावादी भूगोल और नारीवादी भूगोल के बारे में विस्तृत जानकारी देनी है ताकि भूगोल में आयी इस नई अवधारणा से भूगोल के अध्ययन-क्षेत्र के विस्तार का एक खाका भी विद्यार्थियों के जेहन में तैयार होगा। जो आगे के अध्ययन में काफी मददगार साबित होगा।

5.1 परिचय (Introduction)

आईए सर्वप्रथम हमलोग आधुनिक अवधारणा में मानवतावादी भूगोल और नारीवादी भूगोल क्या है? के बारे में जानने की कोशिश करते हैं। भूगोल में इन दोनों अवधारणा का आरम्भ लगभग एक साथ ही कहा जा सकता है वह है 1970 का दशक। जहाँ मानवतावादी भूगोल (Humanistic Geography) जो मानव भूगोल में प्रयुक्त एक उपागम है जिसके अन्तर्गत मानव के ज्ञान क्षमता, कार्य-कुशलता, सुजनात्मकता, सक्रियता आदि को अधिक महत्त्वपूर्ण माना जाता है। इस अवधारणा का विकास प्रत्यक्षवाद (Positivism) के विरूद्ध प्रतिक्रिया के रूप मं हुआ। वहीं दूसरी ओर नारीवादी भूगोल (Gender Geography) में यौन असामनता और जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में स्त्री उत्पीड़न के प्रश्नों पर बल देता है।

5.2 भूगोल में आधुनिक विचारधारा : मानवतावादी भूगोल और नारीवादी भूगोल (Modern Concepts in Geography : Humanistic Geography & Gender Geography)

जैसा कि आपलोगों को परिचय (Introduction)में मानवतावादी भूगोल और नारीवादी (Gender/ Feministic Geography) क्या है? के बारे में बताया गया है। आगे हमलोग अध्ययन की सुविधा को ध्यान में रखकर बारी-बारी अर्थात् पहले हमलोग मानवतावादी भूगोल (Humanistic Geography) उसके बाद नारीवादी भूगोल (Gender Geography) के बारे में अध्ययन करेंगे।

5.3 मानवतावादी भूगोल (Humanistic Geography)

भूगोल में मानवतावादी भूगोल (Humanistic Geography) का आरम्भ 1970 के दशक में माना जाता है, परन्तु इसका विकास 1960 के दशक के अन्त का है। इस अवधारणा का विकास मात्रात्मक भूगोल तथा प्रत्यक्षवाद (Positivism) के विरूद्ध प्रतिक्रिया के रूप में हुआ। मानवतावादी भूगोलवेत्ता मात्रात्मक तकनीक द्वारा अपनाये विधि तंत्र तथा मान्यताओं को इसलिए अस्वीकार करते हैं, क्योंकि यह मानवीय विश्व तथा मानवीय मुद्दों यथा - सामाजिक संस्थाओं, मूल्य, प्रथा, परम्पराओं एवं सौंदर्य बोध को महत्त्व नहीं देता है। पुनः क्षेत्रीय विश्लेषक विचारधारा (Spatial Analysis Paradigm) को जिसमें क्षेत्र या स्थान को सतह ज्यामितीय के सतह एवं बिन्दु की अवधारणा तक सीमित कर दिया है, उसे भी नकारा है। मानवतावादी भूगोलवेत्ता का अध्ययन एक विशिष्ट रीति से करना चाहते हैं जिसमें मानव की सक्रिय तथा केन्द्रीय भूमिका हों, जिसमें मानव विज्ञान विज्ञता, मानव एजेन्सी (Agency), मानव जागरूकता (Awareness) तथा मानव क्रियाशीलता को केन्द्रीय एवं सक्रिय महत्त्व दिया जाता है। इस अर्थ में मानवतावादी भूगोलवेत्ता भूगोल का अध्ययन सम्पूर्णता से मानव हित में करना चाहता है। इस विचारधारा के विकास की झलक काण्ट के दर्शन में मिलता है। इसका विकास बिडाल-डी-लॉ-ब्लाश, फ्रेब्रे, कार्ल-ओ-सावर, हार्टशोर्न, विलियम क्रिक, ट्वान (Tuan) तथा ऐनी बटीमर (Anne Buttimer) के विचारों एवं लेखों में मिलता है।

मानवतावादी विचारधारा ने अपना विशिष्ट विधितंत्र विकसित किया है जो वस्तुनिष्ठता के अभाव के बावजूद अपना महत्त्व रखता है।

5.4 मानवतावादी विचारधारा का विकास (Development & Humanistic Concept)

मानवतावादी विचारधारा का आरंभ इमैनुअल काण्ट (E.Kant) से माना जाता है। काण्ट (kant)

किसी क्षेत्र विशेष के सम्पूर्ण बोध के लिए स्थान, इतिहास तथा समय के अध्ययन को मानते हैं। मानवतावादी की इस विचारधारा का प्रचलन फ्रांसीसी भूगोलवेत्ताओं, विशेषकर फ्रेब्रे (Febvre) और बिडाल-डी-ला-ब्लाश के द्वारा हुआ। ये संभवादी भूगोलवेत्ता संभावनाओं (Possibilities) के चयन में मानव की निर्णायक भूमिका मानते हैं।

आदर्शवादी विचारक गुल्के (Guelke) के अनुसार, मानसिक क्रियाशीलता का नियंत्रण पदार्थ एवं प्रक्रियाओं से भी नहीं हो सकता वरन विश्व को अप्रत्यक्ष रूप से विचारों द्वारा जाना जा सकता है जो अन्ततः व्यक्ति के विशेषगत अनुभव पर आधारित होता है।

इस प्रकार गुल्के (Guelke) ने मात्रात्मक तकनीक (Quantitative Method) और प्रत्यक्षवाद (Positivist) दर्शन के गठजोड़ को खतरनाक माना है।

एनी बेट्टीमर (Anner Buttimer) ने बिडाल-डी-ला-ब्लाश की परम्परा को आगे बढ़ाया है। उनके अनुसार किसी घटना तथा वहाँ के लोगों का अध्ययन उनके निकट जाकर हो सकता है न कि उनसे दूर हट कर।

व्यवहारवादी भूगोलवेत्ता विलयम किर्क (W. Kirk) ने बिना नाम लिये मानवतावादी विचार को प्रस्तुत किया और कहा कि व्यवहारवादी (Behaviourist) वातावरण का निर्माण व्यक्ति के विषयगत दृष्टिकोण से होता है।

ट्वान (Tuan) के अनुसार भूगोल मानव का दर्पण है जो मानव अस्तित्व तथा जीवन के सार को बतलाता है। जिस प्रकार साहित्य एवं कला के अध्ययन से मानव जीवन का पता चलता है, उसी प्रकार किसी स्थलाकृति का अध्ययन समाज के सार द्वारा हो सकता है जिससे उसकी रचना होती है। ट्वान (Tuan) का मानना है कि वैज्ञानिक रीति से मानव के अध्ययन में मानव विज्ञता तथा ज्ञान की भूमिका को कम करके आँका जाता है। मानवतावादी भूगोल इसके विपरीत यह समझने का प्रयास करता है कि कैसे भौगोलिक क्रियाकलाप तथा घटना-क्रम की अभिव्यक्ति मानव की विज्ञता द्वारा होती है।

5.5 मानवतावादी भूगोल का सार (Basis of Humanistic Geography)

ट्वान (Tuan) महोदय ने मानवतावादी भूगोल के पाँच आधारभूत सार बतायें हैं जो कि निम्नलिखित हैं :-

(i) भौगोलिक ज्ञान की प्रवृति तथा मानव अस्तित्व में उसकी भूमिका

(ii) मानव व्यवहार एवं स्थान के पहचान में भू-भाग की भूमिका

(iii) भीड़-भाड़ एवं गोपनीयता के बीच अन्तर्सम्बन्ध

(iv) जीवन को प्रभावित करने में ज्ञान की भूमिका

(v) मानव क्रियाशीलता को प्रभावित करने में धर्म की भूमिका

(i) भौगोलिक ज्ञान की प्रवृति तथा मानव अस्तित्व में उसकी भूमिका : भूगोल का ज्ञान एक पाश्विक वृत्ति है। मनुष्य क्षेत्र, अवस्थिति, स्थान तथा संसाधनों के बारे में सामान्य जानकारी रखता है, किन्तु

उसके व्यवहार में विभिन्न वर्गों में भिन्नता मिलती है। एक मानव भूगोलवेत्ता का कार्य इस प्रकार इसी भौगोलिक ज्ञान का अध्ययन करता है। सामान्य रूप से भूगोल का विस्तृत ज्ञान जीव अस्तित्व के लिए आवश्यक है।

(ii) मानव व्यवहार एवं स्थान के पहचान में भू-भाग की भूमिका : भू-भाग तथा स्थान का भाव भी एक पाश्विक वृत्ति है। मानव भूगोल यह पहचानने का प्रयास करता है कि कैसे एक क्षेत्र गहन रूप से एक मानवीय क्षेत्र बन जाता है।

(iii) भीड़-भाड़ एवं गोपनीयता के बीच अन्तर्सम्बन्ध : भीड़-भाड़ के कारण मानव तथा पशु मनोवैज्ञानिक दबाव अनुभव करते हैं; जबकि एकान्त से व्यक्ति हलकापन अनुभव करता है। एकांत तथा गोपनीयता किसी क्षेत्र विशेष के प्रति मानव की चिन्तन प्रक्रिया तथा निर्णय लेने की क्षमता को प्रभावित करता है। मानव भूगोल में इसी मानवीय निर्णय का अध्ययन होता है।

(iv) जीवन को प्रभावित करने में ज्ञान की भूमिका : लगभग सभी व्यक्ति तथा व्यावसायिक योजनाकार अपने आर्थिक क्रिया-कलापों की योजना अपने ज्ञान एवं तकनीक के आधार पर बनाते हैं। निर्णय लेने में किस हद तक योजनाकारों ने आर्थिक सिद्धान्त तथा सहयोग का सहारा लिया है तथा उसके परिणाम कितने लाभकारी हैं। ये सारे प्रश्न मानवतावादी भूगोलवेत्ताओं द्वारा पूछे जाते हैं।

(v) मानव क्रियाशीलता को प्रभावित करने में धर्म की भूमिका : लगभग हर संस्कृति में ध र्म की प्रधानता मिलती है। एक धार्मिक व्यक्ति वही है जो विश्व एकत्व तथा अर्थ को जानना चाहता है। पुन: धार्मिक संस्कृति वह है जिसमें विश्व की एक स्पष्ट संरचना होती है। यह आकर्षण एक संस्कृति से दूसरी संस्कृति तथा एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में भिन्न होता है। मानवतावादी भूगोल में इस बात की आवश्यकता होती है कि एकत्व के प्रति मानव की इच्छा में होने वाली भिन्नता को जान सके न कि इस बात के लिए कि कैसे यह क्षेत्र एवं स्थान के संगठन को प्रत्यक्ष करने में सफल होता है।

5.6 मानवतावादी भूगोल के विधितंत्र (Methodology of Human Geography)

(i) मानवतावादी भूगोल में मानव के आत्म जागरूक प्रयास को शामिल किया जाता है। मानव अनुभव तथा मानव अभिव्यक्ति हेतु एक विशेष प्रका के ज्ञान, प्रतिक्रिया तथा पदार्थ से जोड़ता है।

(ii) मानवतावादी विधितंत्र व्याख्या एवं स्पष्टीकरण के ज्ञान (Hermenevics) पर आधारित है जिसमें साहित्यिक आलोचना, सौंदर्य बोध तथा कलात्मक इतिहास को शामिल किया जाता है।

(iii) मानवतावादी भूगोल किसी स्थान या स्थलाकृति के मूर्त रूप को सामने रखकर कार्य-कारण संबंध की पहचान कराता है।

(iv) मानवतावादी भूगोल सांख्यकीय एवं मात्रात्मक तकनीक से भिन्न सहभागी पर्यवेक्षण, विचार-विमर्श तथा तार्किक निष्कर्ष पर जोर देकर मानव तथा स्थान के बीच सह-सम्बन्ध खोजता है।

(v) मानवतावाद एक ऐसा दर्शन है जो वैज्ञानिक जाँच के पूर्व विश्व के रहस्यों को उद्घाटित करता है।

5.7 आलोचना (Criticism)

(i) मानवतावादी भूगोल में एक खोजकर्त्ता अपने निष्कर्षों के प्रति संवेदनशील होता है।

(ii) मानवतावादी भूगोल विधि तंत्रीय दृष्टि से भौतिक भूगोल एवं मानव भूगोल में अंतर करना है। भौतिक भूगोल में अपनाये जाने वाले मात्रात्मक तकनीक का उपयोग मानव भूगोल के सिद्धान्त तथा मॉडल के निर्माण अथवा परिकल्पनाओं की जाँच में नहीं हो सकता है।

(iii) मानवतावादी भूगोल मुख्य रूप में सहभागी पर्यवेक्षण पर आधारित है जिसके आधार पर सिद्धान्त, निष्कर्ष, सामान्यीकरण अथवा क्षेत्रीय प्रारूप को पाना कठिन है अर्थात् मानवतावादी भूगोल शुद्ध वैध विधि तंत्र पर आधारित नहीं है, क्योंकि यह अधिक विषयगत दृष्टिकोण अपनाता है।

(iv) मानवतावादी भूगोल उद्योगों की अवस्थिति तथा भूमि उपयोग के अवस्थिति विश्लेषण से संबंधित व्यावहारिक खोजों या नीति-निर्माण में सहायक नहीं होता है।

(v) इंट्रीकीन (Entrikin) (1976) के अनुसार मानवतावादी भूगोल एक प्रकार की आलोचना है जो कि उपदेश करता है न कि मात्रात्मक विश्लेषण की तरह कोई वैकल्पिक प्रारूप विकसित करता है।

5.8 नारीवादी/महिलावादी भूगोल (Gender/Feministic Geography)

यह भी भूगोल का एक नूतन आयाम है। भौगोलिक कार्यों एवं शब्दावलियों को देखने से प्रतीत होता है कि स्थानिक जगत में स्त्रियों की कोई पहचान नहीं है। भूगोल हमेशा 'मनुष्य एवं पर्यावरण', 'मनुष्य एवं संस्कृति', 'मनुष्य एवं प्रकृति' जैसी शब्दावलियों का प्रयोग करता रहा। यद्यपि यहाँ 'मनुष्य' में स्त्रियाँ सम्मिलित मानी जाती हैं, किन्तु प्रत्यक्षत: तो यह पुरूष प्रधान शब्दावली है जो महिलाओं के स्वतंत्र अस्तित्व को नकारती है। एक के बिना दूसरे के अस्तित्व की कलपना भी नहीं की जा सकती है। इसी दर्शन के तहत आधुनिक काल में नारियों के अंदर पुनर्जागरण हुआ है। इसी के अध्ययन के लिए नारीवादी/महिलावादी/लैंगिक भूगोल का विकास हुआ है। इसे ही भूगोल में नारीवादी चिन्तन (Feministic/ Gender concept in Geography कहा जाता है।

नारीवादी भूगोल से तात्पर्य नारीवादी राजनीति और लिंग भेद से संबंध सैद्धांतिक चिन्तन और उनकी आधारभूत मान्यताओं पर आधारित भौगोलिक अध्ययन से है।

5.9 नारीवादी भूगोल का विकास (Development & Gender Geography)

इस विषय पर समाज वैज्ञानिक चिंतन के दशक में पश्चिमी देशों में महिलाओं के नागरिक अधिकारों से संबंधित आंदोलन के साथ प्रारम्भ हुआ था। महिला अधिकारों के लिए संघर्ष उस समय पश्चिमी देशों में उभरती हुई आमूल परिवर्त्तनवादी मार्क्सवादी चिंतनधारा से प्रेरित और उसका अभिन्न अंग

था। महिला अधिकारों के लिए संघर्ष उस समय पश्चिमी देशों में उभरती हुई आमूल परिवर्तनवादी मार्क्सवादी चिंतन धारा से प्रेरित और उसका अभिन्न अंग था। भौगोलिक अध्ययन में नारीवादी चिन्तन 1970 के दशके के बीच वर्षों में सामाजिक प्रासंगिकता संबंधी विचार परिवर्तन के साथ प्रारंभ हुआ था। इस प्रकार के अध्याय में मार्क्सवादी चिंतक अग्रणी थे, परन्तु अनेक उदारवादी विद्वान भी इस विमर्श में सक्रिय भूमिका निभा रहे थे। अध्ययन का मुख्य उद्देश्य इस प्रश्न का उत्तर ढूँढ़ना था कि समाज में महिलाएँ पुरूषों की अपेक्षा गौण स्थिति में क्यों हैं? नारीवादी भूगोलवेत्ताओं का दृढ़ विश्वास है कि सामाजिक संबंधों के निर्धारण और स्थानीय भुदृश्य के निर्माण में लिंग भेद की भूमिका अन्य सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक कारणों से कहीं अधिक महत्व की है।

नारीवादी विमर्श में लिंग भेद (जेण्डर) का तात्पर्य स्त्री और पुरुष के कर्त्तव्यों और अधिकारों में पाए जाने वाले सामाजिक व्यवस्थाजन्य विभेदों से है और यौन (सेक्स) शब्द का तात्पर्य स्त्री-पुरूष के बीच जैविक संरचना संबंधी अन्तर से है। अत: नारीवादी भूगोल की परिभाषा देते हुए इंस्टीच्यूट ऑफ ब्रिटिश जिआग्राफर्स (I.B.G.) द्वारा स्थापित 'स्टडीग्रुप' (Study Group) ने इसे भूगोल की वह शाखा बताया जो अपनी ''व्याख्या में सामाजिक व्यवस्था की लिंग भेद पर आधारित संरचना और उसके सामाजिक और भौगोलिक परिणामों पर ध्यान केन्द्रित करती है और लिंग भेद से उत्पन्न दुष्परिणामों को तत्काल सुधारने और कालान्तर में लिंग भेद को समाप्त कर सम्पूर्ण लैंगिक समानता स्थापित करने की दिशा में सक्रिय प्रयास के प्रति प्रतिबद्ध है।''

नारीवादी विचारकों की आधारभूत मान्यता है कि सामाजिक व्यवस्था द्वारा स्थापित स्त्री और पुरुष के अधिकारों और कर्त्तव्यों में विभेद प्राय: सदा ही पुरुषों के पक्ष और स्त्रियों के विरूद्ध होते हैं। अत: संवैधानिक स्थिति चाहे जो हो वास्तविक जीवन में स्त्री और पुरुष के अधिकार और कर्तव्य समान नहीं है, सामाजिक व्यवस्था पुरूष प्रधान है, परिणामस्वरूप पुरूषों को समाज में स्त्रियों की अपेक्षाकृत अधिक सम्मान मिलता है, और उन्हें उन्नति तथा विकास के अपेक्षाकृत अधिक उत्तम अवसर प्राप्त हैं। अत: नारीवादी अध्ययन की अन्य शाखाओं की भाँति नारीवादी भूगोल यह जानने का प्रयास करता है कि समाज में लिंग भेद पर आधारित व्यवस्था को किस प्रकार समाप्त कर उसके स्थान पर ऐसी व्यवस्था की स्थापना की जाए जिसमें स्त्री और पुरूष को बराबरी का स्थान मिले।

5.10 नारीवादी चिन्तन के भेद (Classification of Feminism)

नारीवादी चिंतन को दो भागों में विभक्त किया जाता है। एक है उग्र नारीवादी दृष्टिकोण (Radical Feminism) एवं दूसरा है सामाजिक नारीवादी (Social Feminism)।

उग्र नारीवादी विचारकों की मान्यता है कि लिंग भेद पर आधारित भेद-भाव के आधार पर सामाजिक व्यवस्था में महिलाओं का गौण स्थान वर्तमान सामाजिक व्यवस्था की आधारभूत असमानता है। उनका तर्क है कि स्त्री और पुरूष के बीच कर्तव्यों और उत्तरदायित्वों का विभाजन वर्ग और जाति संबंधी सामाजिक विभाजन लिंग भेद पर आधारित विभाजन का परिणाम है। अत: उग्रवादी नारीवादी भूगोलवेत्ताओं के अनुसार लिंग भेद पर आधारित असमानता और भेद-भाव को समाप्त किए बिना अन्य प्रकार की असमानताओं का अन्त संभव नहीं है। इसलिए आवश्यक है सामाजिक परिवर्तन के प्रयास लिंग भेद पर

आधारित भेद-भाव और असमानता के निवारण के साथ प्रारम्भ किए जाएँ। उग्रवादी नारीवादियों की मान्यता है कि स्त्री और पुरूष समाज के दो आधारभूत वर्ग (Classes) हैं। अत: जिस प्रकार मार्क्स का सुझाव था कि श्रमिक वर्ग को सामाजिक उत्पादन व्यवस्था का नियंत्रण अपने हाथ में ले लेना सामाजिक परिवर्तन की अनिवार्य शर्त है, उसी प्रकार फायरस्टोन (1971) से नारीवादी चिन्तकों का मानना है कि सामाजिक परिवर्तन लाने के लिए आवश्यक है कि शिशु जन्म और जनसंख्या वृद्धि पर महिलाओं का पूरा नियंत्रण हो, क्योंकि पुरूषों का उनके ऊपर वर्चस्व स्थापित करने में सफल होने का यही प्राथमिक कारण हे। इन सभी बातों में विद्वानों का जोर लिंग भेद और उससे संबंधित भेद-भाव पर है यौन-भेद पर नहीं। उग्रवादी चिंतक समाज में महिलाओं के शोषण का मुख्य कारण पितृ प्रधान सामाजिक व्यवस्था (पैट्रिआर्की) को मानते हैं, जिसके अन्तर्गत सामाजिक संबंधों में स्त्री और पुरूष की परस्पर भूमिका इस प्रकार से स्थापित की जाती है कि समाज में महिला का स्थान गौण और पुरूष की वर्चस्वता असंदिग्ध रहे। इस दृष्टि से उग्रवादी नारीवादियों की दृष्टि में स्त्री और पुरूष समाज के दो परस्पर विरोधी वर्ग प्रतीत होते हैं। उनकी मान्यता है कि स्त्री-पुरूष के बीच इसकी संघर्ष में आयु, जाति और आय के आधार पर किसी विभाजन की कोई प्रासंगिकता नहीं है। इन उग्रवादी चिंतकों के अनुसार स्त्री-पुरूष संबंधों में पुरूष की प्रधानता के परिणामस्वरूप समाज में महिला की भूमिका जीवन के निजी कार्यों तक ही सीमित रह गई है। फलस्वरूप महिलाओं को परिवार के स्तर पर पुरूषों के लिए अनेक कार्य (सेवा) करने होते हैं जो पूरी तरह एकतरफा होते हैं; उनका कोई प्रतिदान नहीं होता। इसके अतिरिक्त बच्चों को जन्म देना और उनका पालन-पोषण भी महिलाओं की अकेली जिम्मेदारी होती है। इस प्रकार पितृप्रधान व्यवस्था महिलाओं को आर्थिक दृष्टि से पुरूषों पर निर्भर बना देती है और समाज में उनका स्थान गौण हो जाता है। महिलाओं को सामाजिक व्यवस्था का गौण अंग बनाने की इस प्रक्रिया की नींव बचपन में ही डाल दी जाती है। उदाहरण के लिए, लड़कियों को लड़कों की अपेक्षा खेलने-कूदने और घूमने-फिरने के अवसर बहुत कम प्राप्त होते हैं। किशोरावस्था में लड़कियों पर लगाए गए इस प्रकार के प्रतिबन्ध और भी कड़े हो जाते हैं। उग्रवादी नारीवादी चिंतक महिलाओं की सामाजिक स्थिति में परिवर्तन लाने के लिए किए जाने वाले प्रयासों में पुरूषों को ही सबसे बड़ी बाधा मानते हैं। उग्रवादी नारीवादियों के अनुसार स्त्रियों की दुर्दशा का मुख्य कारण लिंग भेद पर आधारित सामाजिक भेदभाव है। समाज की अन्य द्वैधताओं को वे गौण मानते हैं।

इसके विपरीत समाजवादी नारीवादी चिंतक लिंग भेद को समाज में व्याप्त अन्य प्रकार के विरोधाभाषों, अन्तर-द्वन्द्वों और विकृतियों का एक अंग मानते हुए महिलाओं की समस्या का सर्वांगीण अध्ययन के पक्षधर हैं। समाजवादी चिंतक उग्रवादी चिंतकों की इस मान्यता से सहमत नहीं है कि समाज की पितृप्रधान व्यवस्था ही स्त्रियों की वर्तमान चिंताजनक अवस्था का अंतिम कारण है। वे उग्रवादी नारीवादियों की इस धारणा को भी पूरी तरह अस्वीकार करते हैं कि स्त्रियों की समस्या वर्तमान अन्यायपूर्ण सामाजिक व्यवस्था का ही एक भाग है, अत: इसके लिए छेड़े जाने वाले संघर्ष में स्त्रियों और पुरूषों के बीच पूरा-पूरा सहयोग महिलाओं की स्थिति सुधारने की दिशा में किए जाने वाले प्रयासों की सफलता की अनिवार्य शर्त है। समाजवादी चिंतक पूँजीवाद और वर्ग भेद को समाज की सारी समस्याओं का मूल कारण मानते हुए वर्ग-भेद के संघर्ष से ध्यान हटाने के किसी भी प्रयास का विरोध करते हैं और इस बात पर बल देते हैं कि महिलाओं की दशा सुधारने और उनको बराबरी के अधिकार बतलाने की दिशा में किए

जानेवाले सारे प्रयासों को इस वृहत्तर वर्ग-संघर्ष का ही अंग मानना चाहिए। अत: समालोचकों ने समाजवादी नारीवाद को वामपंथी चिंतन धारा का ''मानवीय पक्ष'' (Human Face) तथा उग्रवादी नारीवाद को लोक कल्याण केन्द्रित धारा (Welfare Stream) बताया है।

5.11 मानवतावादी चिन्तन धारा एवं नारीवादी भूगोल में संबंध (Relationship between Humanistic Gender Geography)

महिलावादी/नारीवादी भूगोल मानवतावादी भौगोलिक चिन्तन से काफी प्रभावित है। इन चिन्तन धाराओं की तरह नारीवादी भूगोल भी भूगोल के क्षेत्रीय विश्लेषण पर आधारित विज्ञान की संकल्पना के विरूद्ध है, क्योंकि इस संकल्पना के अन्तर्गत मानव व्यवहार का अध्ययन अन्य चिंतनहीन तत्त्वों की भाँति ही एक ''विषय'' अथवा वस्तु के स्तर पर किया जाता था। इन चिन्तन धारा की प्रेरणा के फलस्वरूप नारीवादी भूगोलवेत्ताओं को भी सूचनाएँ एकता करने (डेटा कलेक्शन) की पुरानी पद्धति (जिसमें सूचनाओं का संग्रह करने में शोधकर्ता का उद्देश्य अपनी पूर्व निर्धारित संकल्पना के सत्यापन के लिए प्रमाण एकत्र करना होता है न कि अध्ययन हेतु चुने गए व्यक्तियों अथवा गुटों की अपनी मान्यताओं और विचार पद्धति को उदघाटित करना पूरी तरह अस्वीकार्य है।

मानवतावादी अध्ययन पद्धति की तरह महिलावादी/नारीवादी अध्ययन पद्धति गहन साक्षात्कार (In depth interview), उपन्यासों और अन्य साहित्यिक स्रोतों से प्राप्त सूचनाओं और सामान्यतया गुणात्मक सूचनाओं (Qualitative Data) पर जोर देती है।

इस आधार पर शोधकर्ता यह जानने का प्रयास करता है कि भिन्न-भिन्न दैनिक कार्यों के सम्पादन और भिन्न-भिन्न क्षेत्रों और स्थानों के प्रयोग में ''पुरूष'' और ''महिला'' का विभेद किस प्रकार सामाजिक व्यवहार पद्धति का अभिन्न अंग बन गया है।

5.12 सारांश (Summing-up)

भूगोल में 1970 के दशक में मानवतावादी भूगोल (Humanistic Geography) और नारीवादी भूगोल (Gender/Feminist Geography) का आरंभ होता है।

मानवतावादी भूगोल जिसके अन्तर्गत मानव के ज्ञान क्षमता, कार्य-कुशलता, सुजनात्मकता, सक्रियता आदि के ऊपर जोर देता है। वहीं दूसरी ओर नारीवादी भूगोल में यौन असमानता और जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में स्त्री-उत्पीड़न के प्रश्नों के उत्तर जोर देता है।

भूगोल में मानवतावादी विचारधारा का विकास मात्रात्मक भूगोल तथा प्रत्यक्षवाद (Positivism) के विरूद्ध प्रतिक्रिया के रूप में हुआ। मानवतावादी भूगोलवेत्ता मात्रात्मक तकनीक द्वारा अपनाये विधि तंत्र तथा मान्यताओं को इसलिए अस्वीकार करते हैं, क्योंकि यह मानवीय विश्व तथा मानवीय मुद्दों जैसे-सामाजिक संस्थाओं, मूल्य, प्रथा, परम्पराओं एवं सौंदर्य बोध को महत्त्व नहीं देता है। पुन: क्षेत्रीय विश्लेषक विचारधारा (Spatial Analysis Paradigm) को जिसमें क्षेत्र या स्थान को सतह ज्यामितीय के सतह एवं बिन्दु की अवधारणा तक सीमित कर दिया है, उसे भी नकार दिया है।